388
148
Microfilm

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi
आह्वानांक Call No. _____
अवाप्ति सं० Acc. No. 388

बन्दे मातरम्

फाँसी के शहीद

अभी लाखों ही बैठे हैं प्यास अपनी बुझाने को।
खत्म हो जायगा खञ्जर का पानी देखते जाओ॥
करेगा खूने नाहक कब तलक मजलूम का जालिम।
रहेगी कब तलक ये हुक्मरानी देखते जाओ॥

संग्रहकर्त्ता व प्रकाशक
राजाराम नागर,
प्रयाग।

मुद्रक
रामअधार यादव,
यूनियन जाब प्रेस, कटरा, प्रयाग।

प्रथमवार] सर्वाधिकार प्रकाशक [मूल्य -)

IMPERIAL RECORD DEPARTMENT
8 - AUG. 1931

छपगई ! क्या ! छपगई !!

जगमगाते हीरे

भारत वर्ष में क्रान्ति फैलाने वाली
अपूर्व पुस्तक मूल्य -)
लेखक व प्रकाशक पं० राजाराम नागर,
पुस्तक मिलने का पता
राष्ट्रीय प्रचारक मंडल
ऊंची की मंडी
प्रयाग।

छप रही है ! शीघ्र प्रकाशित होगी छप रही है !!

परिवर्तन

(राष्ट्रीय उपन्यास)
लेखक पं० सच्चिदानन्द जी
मूल्य =)

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No. 388
Date 8.12.71
GOVT. OF INDIA

फाँसी के शहीद

भगत सिंह की वीरता

*(लेखिका एक राष्ट्रीय सेविका)

ये आह भगत सिंह की खाली न जायगी।
फांसी है शेरे नर की कुछ रंग लायगी॥

शिकवा नहीं गवर्नमेण्ट से तकदीर हमारी।
देखेंगे किस्मत कब तक ये पलटा न खायगी॥

भाई बहन को उसने दिलासा दिया था खूब।
हम आजादी पर मरते हैं रूह फिर लौट आयेगी॥

जाकर बहन लाहौर ये माता को समझाना।
हम जाते हैं बहिश्त में न वो दिल दुखायेगी॥

भाई हमारे मरने पर मातम न मनाना।
कहानी मेरी भारत में कुछ कर दिखायेगी॥

*इस कविता पर देवी जी को हार्दिक धन्यवाद है आशा है हमारी अन्य बहिनें भी इसी प्रकार उन्नति करेंगी—

—प्रकाशक

वीर आज़ाद

मरते मरते मर गया लेकिन न छोड़ा आन को।
लाल ख़ूँ से रंग गया आज़ाद एलफ्रेड पार्क को॥
काशी जन्म स्थान था और चन्द्रशेखर नाम था।
क्रान्ति दल का था पुजारी एक था माँ-बाप का॥
उम्र १४ साल में उसको लगे थे बेंत बीस।
बेंत क्या फौलाद थीं नौकरशाही के सत्यानाश को॥
काशी से आया था छिप कर प्रयाग एलफ्रेड पार्क में।
लाल ख़ूँ से रंग गया आज़ाद एलफ्रेड पार्क को॥
इस ओर था आज़ाद अकेला हाथ में लीडर लिये।
उस ओर था पुलिस का दल हाथ में पिस्तल लिये॥
मरते मरते मर गया घायल किया था तीन को।
आखिरी गोली से मर कर जा सिधारा स्वर्ग को॥

सत निकले

शहीदाने वतन के ख़ूने नाहक़ का जो सत निकले।
तो उसके ज़र्रे ज़र्रे से भगतसिंह और दत्त निकले॥
चढ़ा ईरान में मन्सूर अनलहक़ कहके सूली पर।
मजा जब है कि तारए हिन्द से ऐसा ही गत निकले॥
ग़ुलामी से शिकायत करने वाले ये तो बतलायें।
कि तुममें आज तक कितने तिलक और लाजपति निकले॥

तीन शहीद

सुखदेव भगत सिंह राजगुरु ये तीनों देश दुलारे हैं।
फांसी पै लटक कर जान जो दी ओ जान से हमको प्यारे हैं॥
यह मौत नहीं यह जीवन है यह मरना नहीं यह जीना है।
नामू से वतन पै शहीद हुऐ नामू से वतन को प्यारे हैं॥
वह अपनी जान पै खेले हैं बेलाग उनकी कुर्बानी है।
ईसार है चर्खें वाला पर रौशन ये चमकते तारे हैं॥
गांधी ने सुनी जिस वक्त खबर अफसोस किया और फरमाया।
मेरी तहरीक के हक में ये खून के कबरेत शरारे हैं॥
जब उनकी जवानी का नक्शा आंखों के सामने आता है।
मगमूम हमातन रंजो गम से हो जाते हम सारे हैं॥
हम अपने कौमी शहीदों की क्यों याद दिलों से महव करें।
क्या और किसी ने भूला है क्या और किसी ने बिसारे हैं॥

रंग जमाने के लिये

जुल्म हर्विग ने किया है रंग जमने के लिये।
हिन्द वालों को मुसीबत में फसाने के लिये॥
खून से सरदार के लिख कर के खूनी डायरी।
सामने रखदी हमारे जी जलाने के लिये॥

लाहौर सेन्ट्रल जेल में गर्चे बनेगी यादगार।
जायंगे आशिक बनने आंसू बहाने के लिये॥
राजगुरु सुखदेव भगत सिंह जिस तरह फांसी चढ़े।
देश भी चढ़ जायगी अब जाँ हथेली पर लिये॥

कौमी तराना

नौजवानों वक्त है मिट जाओ कौमी आन पर।
देखना बट्टा न लग जाये वतन की शान पर॥
खिरमने हिन्दोस्तान पर बिजलियाँ टूटा करें।
हैफ गर फिर भी न जूँ रेंगे तुम्हारे कान पर॥
चहचहाना भूल जाओगी चमन खतरे में है।
बुलबुलो क्या देखती हो खेल जाओ जान पर॥
कसरे आज़ादी की राहों का पता लग जायगा।
गर निगाह डालो जरा तुम चीन औ जापान पर॥
चर्खे कज रफतार चक्कर में न आ जायें कहीं।
डालता है हाथ अर्जुन भीम की सन्तान पर॥

भगत सिंह

फांसी पै वीरों का चढ़ना कुछ और ही रंग लायगा।
इस तरह मरने से हिन्द पै गम का बादल छायगा॥

हकुमते बरतानिया अब जुल्म का हद हो चुकी।
ऐसा तेरा जुल्म अब हमसे सहा नहीं जायगा॥
हमारे भगत सिंह वीर को हमसे जुदा जो है किया।
इसका अब अन्जाम तू थोड़े दिनों में पायगा॥
ऐ नौजवानों तैयार हो मरने के लिये।
देश की वेदी पर अब से सर चढ़ाया जायगा॥

खून के छींटें

ये छींटे खून की उस दामने कातिल कहानी है।
शहीदाने वतन की कुछ निशानी देखने जाओ॥
अभी लाखो ही बैठे हैं बुझाने को पियास, अपना।
खतम हो जायगा खन्जर का पानी देखते जाओ॥
अरे साहब जिबह करने से क्यों मुंह फेर लेते हो।
मेरे गरदन पै खञ्जर की रवानी देखते जाओ॥
करेगा खूने नाहक कब तलक मजलूम का जालिम।
रहेगी कब तलक कं हुकमरानी देखते जाओ॥
हमारी आह से आतिश भड़क उड़ेगी दुनिया में।
अजब गर्दिश है रंगत आस्मानी देखते जाओ॥

'सत्याग्रह संग्राम'

मन मेरा मंडरा रहा है युद्ध के मैदान में।
शब्द बेधी बाण से कर अन्त दूँ एक आन में॥
गाँडीव होता हाथ तो कुछ कर दिखाते हम अभी।
भारतीय धीर्य का परिचय करादेते अभी॥
नाद लोगों का भयंकर यदि सुनाता है कहीं।
मन मेरा ताली बजा उत्तर उछाल देता वहीं॥
जहाज उड़ते नीलनभ में हैं हवाई यदि कहीं।
शत्रुनाशक गोलियों से नाश कर देता वहीं॥
क्षत्रियों का लाल हूं वीरों की मैं सन्तान हूँ।
बल है सागर पार तो भी महा बलवान हूँ॥
सीख लो पूरी कवायद, प्रियदेश झण्डा हाथ है।
सर पै लाठी पड़ रहीं, जबाँ पै वन्दे मात है॥
छोड़ कर स्कूल बन वालंटियर जाऊँ अभी।
शत्रु का छक्काछुड़ा कर, लौट के आऊँ तभी॥
समझे हैं मोहन को भी कृष्ण का अवतार हैं।
अर्जुन जवाहर युवकों के वीणा के तार हैं॥
वीर गण रण पथ बढ़ रहे सह रहे गोलियों की मार हैं।
संग में जवाहर लाल हैं, सत्यपथ पै हर कदम हर बार हैं।

गाना

जिगर संग कर लो अरे आने वालो।
नहीं तो पड़े घर में बच्चों को पालो॥
अगर दिल में हो जख्म किन: होगया।
तो कुर्बान हो सब ये धूनी रमा लो॥
न डर जेल का हो न फाँसी का गम हो।
मुसीबत जो आये खुशी से उठालो॥
मगर सोच लो दिल में गुस्सा न आये।
ये आने के पहले जरा आजमा लो॥
स्वराज्य ऐसी शै है नहीं जिसको शर्मा।
पड़ा राह में खुशी से उठा लो॥

लाल झण्डा

क्रान्ति के झण्डे को जब नौजवान लेंगे।
विप्लव के नगारों से लंडन को हिला देंगे॥
पुलिस भी हमारी है पलटन भी हमारी है।
वक्त तो आने दो सब करके दिखा देंगे॥
स्वराज्य की देवी गर बलिदान जो चाहेगी।
निज शीश कटा करके देवी को चढ़ा देंगे॥

कातिल के जुल्म की अब परवाह नहीं हमको ।
हम हड्डियों से अपनी शमशीर बना लेंगे ॥
लंडन के गोरे साहब जो हम पै हँस रहे हैं ।
बस शस्त्र अहिंसा से हम उनको हरा देंगे ॥

गाना

हमारे खूँ से बने हैं गोरे हमीं को काला बता रहे है ।
हमीं से पैसा वसूल करके हमीं को जालिम सता रहे हैं ॥
यहाँ पै आके किया तिजारत जमाया हिन्दोस्तान पै सिक्का ।
तबाह कर दीन दुखिया भारत ये अपना शासन जमा रहे हैं ॥
ये दीन भारत के भूखे बच्चे हैं भूखे मरते रुदन मचाते ।
औ देखो लंदन के हैं बाशन्दे जो चाय बिस्कुट उड़ा रहे हैं ॥
गुलामी से देख हिन्द जकड़ा बजाया मोहन ने शंख आला ।
जो लाल भारत के सो रहे थे उन्हें तो गांधी जगा रहे हैं ॥
कुछ भी दिल में रहम तो लाओ सताना अच्छा न बेकसों का ।
तू क्यों न खाता है खौफ उनका जो सारी दुनियाँ चला रहे हैं ॥
जो तुम चलाओगे गन मशीनें तो हम भी सीना अड़ाय देंगे ।
भगायेंगे हम तुम्हें भी लंदन ये सत्य बानी सुना रहे हैं ॥
बनायेंगे हम अनेकों जंगी अनोखा ये जंग मचा मचा कर ।
निशस्त्र होकर भी 'भीम' ऐसा बे गर्जना हम सुना रहे हैं ॥

काकोरी के शहीद

थे शेर जंग आज़ादी में काकोरी के शहीद।
फाँसी पर गये झूल थे काकोरी के शहीद॥

जाता था ट्रेन में जो सरकारी खजाना।
डाला था डाका ट्रेन में काकोरी के शहीद॥

नाना व धूधू पंत का खाका था लिया खींच।
वीरों में दिलावर थे काकोरी के शहीद॥

शाहजहाँपुर रहते थे अशफाक उल्ला खाँ।
बिसमिल राम प्रसाद हुये काकोरी के शहीद॥

काशों के जीतेन्द्र लाहिड़ी व बक्शी जी भी थे॥
आजन्म काला पानी गये ककोरी के शहीद।

स्वतंत्रता के पागल थे वे संगे दिल मजबूत।
करते थे क्रान्ति जोरों में काकोरी के शहीद॥

मिल जायगा

हम गरीबों के सताने का मजा मिल जायगा।
क्या मिटायेगा हमें जालिम ये खुद मिट जायगा॥
कांप जायेगी पुलिस और ये रिसाले पल्टने।
हिन्दू औ मुस्लिम का जिस दिन एक दिल हो जायगा॥
ग्यारह शर्तें जर नहीं मन्जूर गांधी की हुईं।
सत्याग्रह के वास्ते सारा जहां तुल जायगा॥
कौम के शोले बढ़ेंगे सिमा योग्य की तरफ़।
जिनकी भड़पन से विलायत खाक में मिल जायगा॥

जगा दिया

किसकी बुलंद आवाजने भारतको आके जागा दिया।
सोया हुआ था बेखबर गांधीने आके जागा दिया॥
लार्ड इरविन पै खयाल लाओ तुम कपड़े बिलायती जला दो।
देखो सब मिल के मानचेस्टरके नाकों दम कर दिया॥
भारत वतन तुम शाद हो इंगलैंड अब बरबार हो।
छोटी सी तकुयेकी नोंकने लंडनकी जड़को हिला दिया॥